23–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बाबा.....घर में बच्चों साथ बैठे हैं। यह घर का घर है और गुरुद्वारा भी कहें इसको। गुरुद्वारा अर्थात् जहां गुरू बैठा हो उनका द्वार। तो गुरूद्वारा भी है। बाप बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे बहुत बाप होते हैं जो बच्चों को थोड़ा रात को पढ़ाते–सिखाते हैं। यह तो वंडरफुल घर है। बेहद का बाप भी है तो बेहद का टीचर,बेहद का (शागिर्द) भी है। बेहद का गुरू कहें तो फालोवर्स भी है। सच्चा2 मेला यह है। बेहद के बाप का और बच्चों का मेला होता है जरूर। इतने बच्चे पतित बने हैं उनको बाप बिना ले कौन जावे?सब बच्चे हैं और एक बाप है। यह तुम बच्चों को भासना आती है। हम आत्माएं अविनाशी हैं। यह शरीर विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। बच्चे जानते हैं यह बाप एक ही बार आत्मा को पवित्र बनाकर ले जाते हैं। चक्र का मालूम हो गया बाबा आया हुआ है। सब आत्मायें वापस जानी हैं। सतयुग में जो देवी–देवता थे वो ही आकर फिर राजभाग करेंगे। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। मनुष्यों को यह .....ही। बीज से ...टार–टारियां निकलती हैं। कितना बड़ा झाड़ है। छोटे मठ–पंथ कितने हैं। जानते हो फिर नया झाड़ बहुत छोटा होगा। मीठे पानी की नदियों के किनारे पर तुम्हारे महल होंगे, बगीचे बड़े2 ,खेती होगी। तो अब स्थापना हो रही है। फिर कैसे पालना होगी। झाड़ वृद्धि को पावेगा। फिर अंत में बाप आवेंगे। यह चक्र बुद्धि में फिरता रहे। तुम स्वदर्शन चक्रधारी और चक्रवर्ती बनते हो। दुनियां में तो कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र अच्छी रीति बैठ जाता है। हमको उंच ते उंच भगवान पढ़ाते हैं। कितना बड़ा नशा है। भगवान इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। यह भी स्टुडेंट है। पढ़ाने वाला वो है। नालेजफुल ज्ञान का सागर भी वो है। ब्रह्मा को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। खुद कहते हैं कि ब्रह्मा के तन से पढ़ाता हूँ। ब्रह्मा की आत्मा भी सुनती है। मंथन करती है। तुम बच्चे हमेशा समझो शिवबाबा पढ़ाते हैं। शिवबाबा को याद करने से तुमको फायदा बहुत होगा। तुम्हारी आयु बढ़ेगी। देवताओ की आयु बड़ी होती है ;क्योंकि पवित्र हैं। मनुष्य भोगी, अपवित्र बनते हैं तो आयु भी छोटी होती जाती है। देवताओं को योगी नहीं कहेंगे। हठयोगी हैं निवृत्ति मार्ग वाले। राजयोगी हो तुम। तुम राजाई ले लेंगे बाकी सब खतम हो जावेगा। फिर योग की दरकार नहीं। कृष्ण को योगेश्वर भल कहते हैं ;परंतु वो है नहीं। उनको ईश्वर ने राजयोग सिखाया उससे पहले जन्म में। अभी बाबा आया है ले जाने। कोई भी चीज में ममत्व नहीं रखना है। कुछ भी ना रहेगा। ना ममत्व रहेगा। बाप कहते हैं डरो मत। ममत्व मिटाने लिए ही कहलवाते हैं कि बाबा यह सबका आपका ही था। आपका ही है। सब कुछ दे देते हैं। तो कहेंगे अच्छा, ट्रस्टी होकर डायरैक्शन पर चलो तो ममत्व नहीं रहेगा। नहीं तो अंतकाल जो फलानी चीज सिमरै वैसे चिंतन में जो मरे तो वैसा ही जन्म लेना पड़े। शरीर भी याद ना पड़े। कुछ भी याद नहीं पड़े तब ही विजयमाला का दाना बन सकते हैं। ममत्व कोई में भी रखा तो फिर जन्म लेना पड़ेगा। जो भी तुम पढ़ते हो जानते हो यह नई दुनियां अमरलोक के लिए है। सो तो बाप के बिना कोई पढ़ा नहीं सकते हैं। तुम्हारी प्रारब्ध होगी नई दुनियां में। देह सहित कोई भी चीज में ममत्व नहीं रखो तो उंच पद पद पा सकेंगे। फिर और कोई को भी सिखा सकेंगे। राजा–रानी बनना है तो प्रजा भी बनानी है। तुम मैसेंजर हो ना। जो भी मिले उनको बताते जाओ। अपने कुल का होगा तो उनको तीर लगेगा। राजधानी बहुत बड़ी बननी है और योगबल से। तुम समझ सकते हो कि इन देवी देवताओं ने लड़ाई कर राजाई नहीं प्राप्त की है। तुम भी पढ़ाई से भविष्य लिए राजाई ले रहे हो। वहां नदियां आदि भी स्वच्छ होंगी। किचरा बिल्कुल नहीं होगा। तो ऐसी राजाई में उंच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक चाहिए। आजकल–आजकल करते2 काल खा जावेगा। इसलिए सर्विस में लग जाना चाहिए। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते रहो।

ओम